

ඉස්ලාමය තුළ සිටින තම ගැත්තන්හට අල්ලාහ් ජර්ම කරයි. එසේනම් ඔහු ඔවුන්ට පුද්ගලවාදයේ ක්රමය අනුගමනය කිරීමට ඉඩ නොදෙන්නේ ඇයි? [304] ? පුද්ගලයාගේ අවශ්‍යතා ආරක්ෂා කිරීම රාජයේ සහ සමාජයන්හි සලකා බැලීම්වලට වඩා ඉහළින් සාක්ෂාත් කරගත යුතු මූලික කාරණයක් ලෙස පුද්ගලවාදීන් සලකනු ලැබේ. එමෙන්ම සමාජය හෝ රජය වැනි ආයතන විසින් පුද්ගලයාගේ අවශ්‍යතා මත බාහිර මැදිහත්වීම් වලට ඔවුන් විරුද්ධ වේ.

كُرْآنِ مَیں اِیسی بھُت-سی آیتیں ہيں، جو بندگان کے لیے اَللّٰہ کی دُیا اور پُرم کا اُللےخ کرتی ہيں۔ پَرنتو بندا کے لیے اَللّٰہ کی مۇہببَت بندگان کے اِک-دُسرے سے پُرم کی تَرہ نہيں ہيں۔ کُيونَکي مَانُوي مَانُکوں مَیں پُرم اِک اِیسی آوِشُیَکَتَا ہيں، جيسے پُرمي تَلَاش کرتَا ہيں اور اُسے پُريَتَم کے پَاس پَا لےتَا ہيں۔ جَبکي مَہَان اَللّٰہ ہَم سے بَنيَا جُ ہيں، ہَمَارے لِيے اُسکی مۇہببَت دُیا اور کُپَا کی مۇہببَت ہيں، تَاکُرتَور کَا کَم جُور کے سَاथ مۇہببَت ہيں، مَال دَار کَا فُکُور کے سَاथ مۇہببَت ہيں، سَکُشَم کَا اَس هَاي کے لِيے پُرم ہيں، بَڈے کَا چُوتے کے سَاथ پُرم ہيں اور هِکَمَت کَا پُرم ہيں۔

क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने बच्चों को वह सब करने देते हैं, जो उन्हें पसंद है ? क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने छोटे बच्चों को घर की खिड़की से बाहर कूदने या बिजली के नंगे तार से खेलने की अनुमति देते हैं ?

यह असंभव है कि किसी व्यक्ति के निर्णय उसके व्यक्तिगत लाभ और आनंद पर आधारित हों और वह ध्यान का मुख्य केंद्र हो। उसके व्यक्तिगत हित देश के हितों एवं धर्म व समाज के प्रभावों से ऊपर हो, उसे अपना लिंग बदलने की अनुमति हो, वह जो चाहे करे, जो चाहे पहने एवं रास्ते में जैसा चाहे करे, इस तर्क की बुनियाद पर कि रास्ता सभी का है।

यदि कोई व्यक्ति एक साझा घर में लोगों के समूह के साथ रहता हो, क्या वह इस बात को स्वीकार करेगा कि घर का उसका कोई साथी इस आधार पर कि घर सबका है, घर के हॉल में शौच करने जैसा धिनौना काम करे ? क्या वह इस घर में बिना किसी नियम या नियंत्रण के रहने को स्वीकार करेगा ? पूर्ण स्वतंत्रता वाला व्यक्ति एक बदसूरत प्राणी बन जाता है और जैसा कि यह सिद्ध हो चुका है और इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि इंसान इस पूर्ण स्वतंत्रता को सहन करने में असमर्थ है।

व्यक्तिवाद सामूहिक पहचान का स्थान नहीं ले सकता, चाहे व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली या

प्रभावशाली क्यों न हो। समाज के सदस्य ऐसे वर्ग हैं, जिन्हें एक-दूसरे की आवश्यकता है। वे एक-दूसरे से अप्रासंगिक नहीं हो सकते। उनमें से कुछ लोग फ़ौजी हैं, कुछ डॉक्टर, कुछ नर्स तो कुछ जज हैं। भला उनमें से किसी एक के लिए यह कैसे संभव है कि वह अपनी खुशी हासिल करने के लिए दूसरों पर अपना लाभ और निजी स्वार्थ लादे और ध्यान का मुख्य केंद्र बन जाए ?

इंसान अपनी रूढ़ियों को स्वतंत्र छोड़कर उनका गुलाम बन जाता है, जबकि अल्लाह चाहता है कि वह उनका मालिक बने। अल्लाह इंसान से चाहता है कि वह एक समझदार, बुद्धिमान व्यक्ति बने, जो अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखे। उससे इच्छाओं को बिल्कुल खत्म करने की मांग नहीं है, बल्कि उसे आत्मा और रूह को ऊपर उठाने के लिए इन इच्छाओं को सही दिशा दिखाना है।

जब एक पिता अपने बच्चों को अध्ययन के लिए कुछ समय ख़ास करने के लिए बाध्य करता है, ताकि वे भविष्य में ज्ञान के मैदान में एक ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकें। जबकि उन बच्चों को केवल खेलने की इच्छा होती है, तो क्या वह इस समय एक क्रूर पिता माना जाता है ?

දුස්මාමග පිළිබඳ ඵරණ හා පිළිතුරු

📧: info@alnajat.org

📞: [+947777777777](tel:+947777777777)

📅 1st Oct 2026 09:32:22